उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में केन्द्रीय विद्यालय व राज्य सरकारी विद्यालयों की भूमिका

अलका खन्ना
सहायक प्रोफेसर
एच.एल.एम. कॉलेज, गा0बाद

मानव ईश्वर की अनुपम कृति है और प्रकृति की सर्वोत्तम देन। समस्त सृष्टि में वही एक ऐसा प्राणी है जो प्रकृति प्रदत्त आदिम प्रवृत्तियों के अतिरिक्त बौद्धिक क्षमता का धनी है। बुद्धि के बल से वह आदिम प्रवृत्तियों को अपने नियन्त्रण में रखने में समर्थ है। अपनी बौद्धिक क्षमता से वह अपना तथा समस्त सृष्टि का उपकार भी कर सकता है और इसका दुरुपयोग करके विनाश के द्वार भी खोल सकता है। अतः यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि बुद्धि का सम्यक् विकास हो ताकि बालक के व्यक्तित्व का उचित रूप से विकास हो सके।

व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है कि बचपन से ही बालक की शिक्षा–दीक्षा ऐसे परिवेश में हो जिससे कि उनका व्यक्तित्व उचित एवं वांछित दिशा में अग्रसर हो सके। पारिवारिक संस्कारों तथा विद्यालय परिवेश की इस सम्बन्ध में बहुत अहम भूमिका है। सामान्यता यह माना जाता है कि विद्यालय के अच्छे–बुरे वातावरण का बालक के व्यक्तित्व पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। बाल्यावस्था व्यक्तित्व के विकास की प्राथमिक अवस्था है, अतः इसी अवस्था से उसकी शिक्षा–दीक्षा को महत्व दिया जाना आवश्यक है। यदि बचपन से ही बालक के सर्वांगीण विकास की ओर पूरा ध्यान नहीं दिया गया तो वह एक अच्छा मनुष्य नहीं बन सकता। बालक के व्यक्तित्व विकास के प्रमुख माध्यम हैं– माता–पिता, शिक्षक व विद्यालय, पारिवारिक एवं सामाजिक पर्यावरण और परिवेश।

अंग्रेजी शब्द PERSONALITY का प्रत्येक वर्ण भी व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों का द्योतक है:–

P	=	**P**erception Capacity (प्रतिबोधन क्षमता)
E	=	**E**motional Stability (भावात्मक स्थिरता)
R	=	**R**esponsiveness to Situation (परिस्थितियों के प्रति दृष्टिकोण)
S	=	**P**erception Capacity (प्रतिबोधन क्षमता)
O	=	**O**rganized (संगठित)
N	=	**N**ot Permanent (लचीलापन)
A	=	**A**ppearance (रूप)
L	=	**L**eadership Qualities (नेतृत्व गुण)
I	=	**I**ntegrated (एकीकृत)
T	=	**T**endencies (प्रवृत्तियाँ)
Y	=	**Y**oung, Unique (विशिष्ट)

अलका खन्ना ,सहायक प्रोफेसर,एच.एल.एम. कॉलेज, गा0बाद

वर्तमान युग प्रतियोगिता का युग है। प्रत्येक व्यक्ति इस प्रतियोगिता के दौर में स्वयं के लिए एक स्थान बनाना चाहता है। सफलता प्रायः उसी व्यक्ति को मिलती है जिसका शिक्षा का स्तर तथा व्यक्तित्व आकर्षण व उच्च स्तर का हो। प्रायः प्रत्येक शिक्षण संस्था अपने छात्रों के व्यक्तित्व विकास के लिए अनेक

प्रकार की पाठ्य सहगामी क्रियाएँ आयोजित करती हैं एवं उनके सुधार के लिए निर्देशन व परामर्श का आयोजन करती है।

किसी भी शिक्षा संस्था का मूल्यांकन उसमें अध्ययन करने वाले छात्रों के व्यक्तित्व से किया जाता है। जो शिक्षण संस्थान अपने छात्रों को व्यक्तित्व के सहज विकास का अवसर ने देकर उसके प्रत्येक काम में हस्तक्षेप करते हैं वे बालक को अधूरा व मनोरोगी बना देते हैं। ऐसी अवस्था में बालक का उचित व्यक्तित्व विकास नहीं हो पाता। व्यक्तित्व मनुष्य की आदतों, दृष्टिकोणों तथा विशेषताओं का संगठन है। जैविक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारणों के योग से व्यक्तित्व प्रभावित होता है किन्तु इस तथ्यात्मक सामान्यीकरण का वैज्ञानिक विश्लेषण एवं शोध भी बहुत आवश्यक है। विज्ञान के इस उन्नत युग में सामान्य रूप से स्वीकृत तथ्यों को भी परखा जाना चाहिए।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण जगत की अनेक स्तर की शिक्षण संस्थायें हैं लेकिन इन सभी में माध्यमिक स्तर पर शिक्षा प्रदान करने का कार्य भारत में कुछ विशेष बोर्ड के द्वारा किया जाता है। जिसे सारिणी–1 के द्वारा दर्शाया गया हैः–

सारिणी सं0–1

भारत में स्थित माध्यमिक बोर्ड

क्र0सं0	बोर्ड
1.	काउन्सिल फोर द इण्डियन स्कूल सर्टीफिकेट (सी.आई.एस.सी.ई.)
2.	सैन्ट्रल बोर्ड ऑफ सैकेण्डरी एजेकेशन (सी.बी.एस.ई.)
3.	इन्टरनेशनल बैकलुरेट (आई.बी.)
4.	स्टेट बोर्ड

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा जगत की अनेक स्तर की शिक्षण संस्थाओं में केन्द्रीय विद्यालयों (सी.बी.एस.ई. बोर्ड) तथा राज्य सरकारी विद्यालयों (स्टेट बोर्ड) का छात्रों के व्यक्तित्व के निर्माण में तथा विकास में कितना योगदान है, इसका अध्ययन करने के लिए एक शोध किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्यः–

प्रस्तुत शोध एक विवरणात्मक अध्यन है जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन करना है। इस प्रकार अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैंः–

1– उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में केन्द्रीय विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन करना।

2– उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में राज्य सरकारी विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन करना।

3– केन्द्रीय व राज्य सरकारी विद्यालयों की भूमिका की तुलना करना।

परिकल्पनाः–

1– उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में केन्द्रीय विद्यालय भूमिका निभाता है।
2– उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में राज्य सरकारी विद्यालय भूमिका निभाता है।
3– केन्द्रीय विद्यालयों तथा राज्य सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन क्षेत्रः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में गाजियाबाद जिले के 4 विद्यालयों को लिया गया है जिसमें दो केन्द्रीय विद्यालय तथा दो राज्य सरकारी विद्यालय सम्मिलित हैं। केन्द्रीय विद्यालयों व राज्य सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में से ''अनियमित विधि'' के अन्तर्गत ''लाटरी विधि'' द्वारा विद्यार्थियों को चयनित किया गया। जिसमें प्रत्येक विद्यालय से 11वीं कक्षा से 25–25 विद्यार्थियों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। विद्यालयों के नाम इस प्रकार हैं–

1– केन्द्रीय विद्यालय, मुरादनगर।
2– केन्द्रीय विद्यालय, गाजियाबाद।
3– सर छोटूराम गर्ल्स इण्टर कालिज, दुहाई, गाजियाबाद।
4– एम.एस.एस. इन्टर कालिज, खुर्रमपुर, मुरादनगर।

उपकरणः–

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का परीक्षण करने के लिए 'आर.बी. कैटल' द्वारा निर्मित 16 पी.एफ. व्यक्तित्व परीक्षण (जिसका हिन्दी रूपान्तर 'एस.डी. कपूर' ने किया है) का प्रयोग किया गया है। यह परीक्षण व्यक्तित्व के 16 पक्षों का आंकलन करता है, जिसके द्वारा छात्रों के व्यक्तित्व सम्बन्धित विभिन्न मूल गुणों को पहचाना जा सकता है। इस परीक्षण में सभी गुणों को द्विअंशीय रूप में इस प्रकार लिया गया।

1– उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में केन्द्रीय विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन करना।
2– उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में राज्य सरकारी विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन करना।
3– केन्द्रीय व राज्य सरकारी विद्यालयों की भूमिका की तुलना करना।

सारिणी सं0–2

व्यक्तित्व परीक्षण के कारक

पी.एफ.	कारक	विलोम कारक
A	अन्तर्मुखी	बाह्यर्मुखी
B	कम बुद्धिमान	अधिक बुद्धिमान
C	भावात्मक	स्थिर
E	विनीत	आक्रामक
F	शान्त	प्रसन्न
	असावधान	सावधान

G	शर्मीला	रोमांचकारी
H	दृढ़ मस्तिष्क वाला	संवेदनशील
I	विश्वास करने वाला	सन्देह करने वाला
L	अव्यवहारिक	कल्पनाशीलता
M	आगे आने वाला	चालाक
N	आत्मविश्वासी	सन्देहशील
O	परम्परागत	प्रयोग करने वाला
Q_1	समूह निर्भर	आत्मनिर्भर
Q_2	अनियन्त्रित	नियन्त्रित
Q_3	तनाव रहित	तनावग्रस्त
Q_4		

आँकड़ों का विश्लेषणः–

छात्रों के व्यक्तित्व को जानने के लिए आर.बी. कैटल द्वारा निर्मित प्रपत्र का प्रयोग किया गया है, जिसके दो प्रकार हैं 'ए' और 'बी'। इसमें व्यक्तित्व से सम्बन्धित 187 प्रश्न हैं तथा प्रत्येक प्रश्न के तीन उत्तर हैं 'ए', 'बी' एवं 'सी'। छात्रों को अपनी इच्छानुसार इन तीन उत्तरों में से एक पर अपनी उत्तर–पुस्तिका में चिन्हित करना है, जिसके आधार पर छात्रों के व्यक्तित्व का निरीक्षण किया गया है। प्रपत्र देते समय उन्हें उचित निर्देश दिए गए तथा प्रत्येक छात्र को यह प्रपत्र व्यक्तिगत रूप से अलग–अलग दिया गया। व्यक्तिगत रूप से प्रपत्र के आयामों पर प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और 'टी' अनुपात की गणना की गई तथा इस प्रकार उपयुक्त सांख्यिकी सूत्रों को प्रयोग करते हुए 16 तालिकाओं द्वारा छात्रों के व्यक्तित्व का मापन किया गया। ये तालिकाएँ व्यक्तित्व के कारक 'ए' से लेकर कारक 'क्यू.4' तक का प्रतिनिधित्व करती हैं।

सारिणी सं0–3

केन्द्रीय विद्यालय एवं राज्य सरकारी विद्यालय के शोध का विवरण

	Central School		**Govt. School**		**'t' Test**	**Central School**		**Govt. School**	
	M_1	**S.D.**	**M_2**	**S.D.**		**SEm**	**SEσ**	**SEm**	**SEσ**
A	9.94	2.40	10.7	1.83	-3.70	0.33	0.24	0.25	0.18
B	8.62	2.08	7.54	1.35	5.83	0.29	0.20	0.19	0.13
C	14.62	3.69	10.94	1.67	15.93	0.52	0.37	0.23	0.16
E	11.18	3.06	11.58	4.41	-1.48	0.43	0.30	0.62	0.44
F	9.7	3.68	11.34	2.82	-6.45	0.52	0.36	0.39	0.28
G	14.94	2.34	12.62	3.54	9.58	0.33	1.66	0.50	0.35
H	13.46	3.94	13.70	3.44	-0.88	0.55	0.39	0.48	0.34
I	11.34	3.12	10.82	2.54	2.18	0.44	0.31	0.35	0.25
L	9.48	2.74	9.52	2.87	1.28	0.38	0.27	0.45	0.32
M	11.1	3.2	12.34	3.19	-4.90	0.45	0.32	0.30	0.32
N	11.62	2.88	10.54	2.19	4.79	0.40	2.04	0.30	0.21
O	12.41	4.30	12.3	4.53	-0.53	0.60	0.43	0.64	0.45
Q_1	9.14	0.76	9.42	3.70	-1.33	0.10	0.76	0.52	0.37
Q_2	9.7	2.08	10.1	2.43	-1.89	0.29	0.20	0.34	0.24
Q_3	13.82	2.06	11.66	2.94	0.96	0.29	0.41	0.41	0.29
Q_4	12.46	1.95	12.66	2.61	-0.09	0.27	0.19	0.36	0.26

शोध के निष्कर्षः–

प्रस्तुत शोध के द्वारा केन्द्रीय विद्यालय एवं राज्य सरकारी विद्यालय के छात्रों के व्यक्तिगत गुणों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है तथा 16 पी.एफ. के विभिन्न कारकों पर प्राप्त परिणामों की उचित व्याख्या की गई जिसे सारिणी सं0–4 द्वारा दर्शाया गया।

सारिणी सं0–4

शोध के परिणामों का विश्लेषण

dkjd	^Vh* ewY;	Mh-,Q-	Lrj ¼0-05½
A	-3.70	20	2.09
B	5.83	14	2.10
C	15.93	24	2.06
E	-1.48	21	2.04
F	-6.45	40	2.01
G	9.58	26	2.06
H	-0.88	25	2.00
I	2.18	20	2.09
L	1.28	17	2.07
M	-4.90	21	2.04
N	4.79	20	2.09
O	-0.53	22	2.03
Q_1	-1.33	17	2.07
Q_2	-1.89	18	2.06
Q_3	0.96	23	2.02
Q_4	-0.09	23	2.02

शोध के परिणामों का विश्लेशण करने से ज्ञात हुआ कि A, E, F, H, L, M, O, Q_1, Q_2, Q_3 एवं Q_4 का प्राप्त 'टी' मान, स्वतंत्रता अंश (डी.एफ.) पर प्राप्त सार्थकता स्तर (0.05) के मान से कम है। इसलिए दोनों विद्यालयों के प्राप्त मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त अन्तर न्यादर्श की त्रुटि के कारण है। लेकिन कारक 'B' का प्राप्त 'टी' मान 5.83, डी.एफ. मान 14 के सार्थकता स्तर के मान 2.10 से अधिक है। परिकल्पना निरस्त होती है इसलिए दोनों विद्यालयों से प्राप्त मध्यमानों का अन्तर अधिक सार्थक है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि केन्द्रीय विद्यालयों के छात्र सरकारी विद्यालयों के छात्रों से अधिक बुद्धिमान है। कारक 'C', 'G', 'T', 'N' का प्राप्त 'टी' मान भी सार्थकता स्तर के मान से अधिक है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि केन्द्रीय विद्यालयों के छात्रों में सरकारी विद्यालय के छात्रों की अपेक्षा भावात्मक स्थिरता अधिक है, वे अधिक सावधानीपूर्वक कार्य करते हैं, अधिक संवेदनशील एवं चालाक हैं।

शोध कार्य के परिणामों की व्याख्या के पश्चात् यह बात स्पष्ट हो जाती है कि केन्द्रीय विद्यालय एवं राज्य सरकारी विद्यालय के छात्रों के व्यक्तित्व गुणों का विकास समान रूप से होता है। दोनों प्रकार के विद्यालयों में बालकों को ऐसी समान परिस्थितियाँ, अनुभव तथा वातावरण मिलता है जिससे बालकों के व्यक्तित्व गुणों के विकास में प्रोत्साहन मिलता है, तथा इसके विपरीत जिन कारणों एवं तत्वों के द्वारा बालकों का व्यक्तित्व विकास कुंठित होता है, वे तत्व भी दोनों प्रकार के विद्यालयों में सक्रिय होते हैं। जिनके द्वारा बालकों का व्यक्तित्व विकास अवरोधित होता है।

सुझावः–

अभिभावकों हेतु कुछ सुझावः–

बालक के व्यक्तित्व के विकास में अभिभावक, अध्यापक एवं मित्र मण्डली अपनी–अपनी भूमिका निभाते हैं। जिस प्रकार का वातावरण बालक को मिलेगा, उसी प्रकार का उसके व्यक्तित्व का विकास होगा। सबसे पहले अहम भूमिका निभाते हैं अभिभावक। कहते हैं कि बच्चे की पहली पाठशाला उसका परिवार होता है और उस पाठशाला के अध्यापका होते हैं अभिभावक। जिस प्रकार एक नन्हे पौधे को हरा–भरा विशाल वृक्ष बनाने के लिए सही खाद, सही मिट्टी की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार बालक के सही व्यक्तित्व के विकास के लिए अच्छे संस्कार तथा अच्छे पारिवारिक वातावरण की आवश्यकता होती है, जोकि उसे सिर्फ अभिभावक ही दे सकते हैं।

1. अभिभावकों को बालकों के व्यक्तित्व के विकास हेतु उनसे अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने चाहिए तथा उन्हें स्वस्थ पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण प्रदान करना चाहिए।
2. अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने मनमुटाव व क्लेश बालकों के सामने न लाएँ ताकि उनका विकास अवरुद्ध न हो।
3. अभिभावकों को समय–समय पर बालकों को पारिवारिक व सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
4. अभिभावकों को बालकों से प्रत्येक विषय पर खुलकर बातचीत करनी चाहिए ताकि बालकों में उदासीनता का विकास न होने पाये।

अध्यापकों हेतु कुछ सुझावः–

अभिभावकों के पश्चात् अध्यापकों की भी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अध्यापक ही विद्यार्थी को शिक्षा के द्वारा सही दिशा में बढ़ने की प्रेरणा देता है।

1. अध्यापकों को चाहिए कि वे छात्रों के लिए ऐसी पाठ्य सामग्री एवं सहगामी क्रियाएँ आयोजित करायें जिससे छात्र सक्रिय होकर भाग लें तथा उनमें सक्रियता गुण की वृद्धि हो सके।
2. अध्यापकों को छात्रों के लिए शैक्षिक भ्रमण, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद–विवाद तथा खेलों की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे बालकों में सकारात्मक व्यक्तित्व गुणों का विकास हो सके।
3. छात्रों के व्यक्तित्व विकास के लिए छात्रों को आपसी समूह में क्रियाकलाप करने के अवसर देने चाहिए ताकि बालकों में आपसी विश्वास की भावना विकसित हो सके।
4. अध्यापकों को छात्रों से मैत्री सम्बन्ध बनाने चाहिए ताकि बालक प्रसन्नचित्त होकर अध्ययन प्रक्रिया में भाग ले सकें।
5. बालकों के स्वभाव को भली–भाँति जानकर उसके अनुरूप व्यवहार करना चाहिए ताकि बालकों में सांवेगिक स्थिरता का विकास हो सके।

विद्यार्थियों के स्वयं के लिए कुछ सुझावः–

अभिभावकों तथा अध्यापकों के पश्चात् कुछ जिम्मेदारी स्वयं विद्यार्थी की भी होती है। उसे यह समझना चाहिए कि उसके खुद के लिए क्या निर्णय सही है तथा क्या गलत और किस प्रकार वह स्वयं का विकास कर सकता है।

1. विद्यार्थियों को विद्यालय में आयोजित होने वाली प्रत्येक क्रियाओं में सक्रियतापूर्वक भाग लेना चाहिए।

2. विद्यार्थियों को अपनी मित्र मण्डली के साथ–साथ अन्य छात्रों के साथ भी मित्रतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए।
3. विद्यार्थियों को शिक्षकों एवं सहपाठियों के साथ अपने विचारों को व्यक्त करना चाहिए।
4. विद्यार्थियों को खेलकूद के साथ–साथ विद्यालय में आयोजित होने वाली अन्य पाठ्य सहगामी क्रियाओं में उत्साहपूर्वक भाग लेना चाहिए।
5. विद्यार्थियों को सदैव प्रसन्न मन से कार्य करना चाहिए।

आज के विद्यार्थी कल का उज्ज्वल भविष्य हैं। मगर ये उज्ज्वल भविष्य तभी बन सकते हैं अगर इनके व्यक्तित्व का विकास सही तरीके से हुआ हो। चाहे अध्यापक, अभिभावक या विद्यालय ही क्यों न हो, हम सभी को इनके विकास में निष्पक्ष होकर योगदान देना चाहिए ताकि हम सभी अपने तथा इनके आने वाले भविष्य को उज्ज्वल बना सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–

गिलफोर्ड जे0पी0 *(1939)* *जनरल साइकोलोजी, लंदन, चैपमान एण्ड हॉल।*

टण्डन आर0के0 *(1961)* *मनोविज्ञान के मूल आधार, नैशनल बुक डिपो, मुरादाबाद।*

मंगल एस0के0 *(1976)* *एजूकेशन साइकोलॉजी, प्रकाश वर्क्स, लुधियाना।*

वास्तवा डी0एन0 *(1978)* *गार्डन एक्सपेरीमेन्टल साइकोलॉजी, विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा।*

चौहान एस0एस0 *(1983)* *एडवान्सड एजूकेशन साइकोलॉजी, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।*

शर्मा आर0ए0 *(2005)* *मापन, मूल्यांकन एवं सांख्यिकी, लॉयल बुक डिपो, मेरठ।*

शर्मा आर0ए0 *(2006)* *शिक्षा अनुसंधान, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।*

भटनागर ए0बी0 *(2009)* *मनोविज्ञान और शिक्षा के मापन एवं मूल्यांकन, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।*

शोध मंथन, *Vol III, Jan 2012*

शोध मंथन, *Vol III, June 2012*